BLM Academy
Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (NTL)
Ph. No. 05946 - 210831, Mob.: 7520068217

परीक्षा प्रणाली व अंकपत्र – एक परिवर्तन की आवश्यकता

June-2009

विद्यालयों में दिया जाने वाला अंक पत्र एक विद्यार्थी के जीवन का एक महत्वपूर्ण अभिलेख माना जाता है व विद्यालय के स्तर का मापदंड। विद्यालय हर सम्भव कोशिश करता है कि उसे आकर्षक से आकर्षक बनाया जाय, स्वरूप में व उसमें भरी जाने वाली सूचना में। कई बार तो वह इतना जटिल होता है कि आम आदमी को उसे समझना कठिन होता है। विद्यालय में कार्य करने वाले अध्यापकों के कार्य में से इस प्रपत्र का हिस्सा सबसे बड़ा होता है। यानी शिक्षक के कुल लिखित कार्य में से सबसे अधिक समय, इसे ही दिया जाता है, क्योंकि यह विद्यार्थी के शैक्षणिक व व्यक्तित्व में सुधार की प्रगति को दर्शाता है हालाकि अधिकतर प्रगति पत्र मे वयक्तित्व पर टिप्पणी औपचारिकता मात्र होती है। इसमें अंकों को दर्शाने के कारण इसका महत्व कल्पनातीत होता है। अभिभावक अपने पाल्यों से कितनी मेहनत करवाते हैं इस प्रपत्र में अच्छे अंक देखने के लिए ताकि वे गर्व से अपने रिश्तेदारों व परिचितों में अपने पाल्य की उपलब्धियों का बखान कर सकें। एक – एक अंक के लिए बच्चों पर अभिभावकों का जो दबाव होता है वह या तो शिक्षक जानता है या विद्यार्थी। गिनती में योग में 1 अंक कम हो गया तब देखिए शिक्षक की शामत, बच्चे ने लापरवाही से 1 अंक खो दिया फिर देखिए बच्चे की स्थिति, कोई प्रश्न थोड़ा सा {ध्घुमा फिरा कर पूछ दीजिए, देखिए कितनी शिकायतें आती हैं कि हमारे बच्चे के 05 नम्बर कम आ गये हैं।

अंक परक शिक्षा ने ज्ञान परक शिक्षा को कही पीछे छोड़ दिया है परिणाम यह है कि विद्यालयों में दिमाग भरे जा रहे हैं पोषण के स्थान पर है (Feeding is being done in place of nourishment of minds in schools)

अभिभावकों की अंक पत्र में 90 प्रतिशत से अधिक अंक देखने की लालसा में और विद्यालयों की अभिभावकों को खुश करने की नीति में विद्यालय अपने वास्तविक कर्तव्य से भटक गये हैं और वे विद्यार्थी को भविष्य के बजाय वर्तमान के लिए तैयार कर रहे हैं। यही कारण है किगृह परीक्षाओं में 90 प्रतिशत अंक लाने वाले विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित होने से वंचित हो रहे हैं। दि० 20/02/2009 को अमर उजाला में छपी रिपोर्ट इसका प्रमाण है।

सर्वप्रथम प्रश्न यह है कि विद्यार्थी की सीखने की क्षमता (Learning capacity) क्या है ? विद्यार्थी को जब कक्षा में पाठ पढ़ाया गया और यदि उसके तुरन्त बाद उसे पाठ को एक बार पढ़ने का मौका दिया जाय और परीक्षा ली जाय तो जो अंक वह प्राप्त करेगा, वह उसकी वास्तविक समझने की क्षमता है और वह अंक उसके अपने हैं। यदि बिना सूचित किए विद्यार्थी की परीक्षा ले ली जाये और उसके 06/10 नम्बर आते हैं और सूचित करने के बाद परीक्षा लेने पर 09/10 आते हैं, तो वह अंक उसके स्वयं के नहीं वरन् अभिभावकों के हैं जिन्होंने उसके साथ मेहनत की। यह अंक तभी तक आयेंगे जब तक अभिभावक उसकी

सहायता करने में सक्षम हैं, जैसे ही वह कक्षा 9 या 10 कक्षा में प्रवेश करता है अभिभावकों की उसकी सहायता करने में असमर्थता के कारण वह अपने वास्तविक स्तर पर आ जाता है। हम उसमें बचपन में स्व अध्ययन की आदत ही नहीं डालते क्योंकि यदि वह खुद से पढ़कर अंक लायेगा तो शायद इतने कम होंगे कि अभिभावक उनका अपने परिचितों में गर्व से जिक्र न कर पायें। उस झूठे सम्मान के लिए बच्चे के साथ कितना अन्याय होता है, यह अमर उजाला में छपी रिपोर्ट से प्रमाणित होता है। जब तक अभिभावक विद्यालय में दिए जाने वाले अंक पत्र को इतना महत्व देते रहेंगे, यह अन्याय चलता रहेगा। कितने प्राइमरी कक्षाओं में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले, बच्चे 10 और 12 कक्षा में 90 प्रतिशत अंक ला पाते हैं व प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित हो पाते हैं ? वहीं कई बार यह देखा जाता है कि प्राइमरी कक्षाओं में औसत बुद्धि का समझा जाने वाला विद्यार्थी कक्षा 10 में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर लेता है।

यह सब रोकने के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को परीक्षा प्रणाली को बदले जाने की आवश्यकता है, जो कि बच्चे की रटने की क्षमता पर आधारित न होकर उसके ज्ञान पर आधारित हो, व उसमें स्वपोषित, स्व–अध्ययन (Self Sustained, Self Study) की आदत पड़े। इसके तहत सर्वप्रथम कक्षा 8 तक अर्द्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षा को समाप्त कर दिया जाना चाहिए, इसके स्थान पर प्रत्येक कक्षा में सतत् विस्तृत मूल्यांकन (Continuous Comprehensive Evaliation)को साप्ताहिक परीक्षायें / पाक्षिक परीक्षाओं द्वारा सख्ती से लागू करना चाहिए। कक्षा 8 तक अंकपत्र में केवल सी० सी० ई० के अंकों का विवरण होना चाहिए। विद्यालयों में कक्षा एक से ही 'मेन्टल ऐबिलिटी' की प्रतिमाह परीक्षा आवश्यक रूप से ली जानी चाहिए ताकि विद्यार्थी बुद्धिमान होने के बावजूद भी लापरवाही के कारण परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। यदि मेन्टल रेबिलिटी की परीक्षा होती है, तो उन्हें अपनी वास्तविक क्षमता का पता चलेगा, उनमें आत्म विश्वास पैदा होगा और वे उसी प्रकार अपना लक्ष्य बनाऐंगे।

कक्षा 9 व 10 में गणित का वर्तमान पाठ्यक्रम बहुत से विद्यार्थियों के लिए एक बोझ होता है व अतः कक्षा 9 व 10 में दो तरह के गणित पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। एक व्यवहारिक गणित का जो बच्चों में लौजिक व रीजनिंग विकसित करे और जीवन में काम आये, व दूसरा एडवांस गणित जो तकनीकी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने में काम आये, व विद्यार्थी अपनी भविष्य की योजनाओं के अनुसार गणित पाठ्यक्रम का चयन कर सके।

कक्षा 10 के बोर्ड द्वारा निर्गत अंक पत्र में केवल गणित, मेंटिल ऐबिलिटी व एक भाषा जिसे विद्यार्थी भविष्य में अपनी शिक्षा व प्रतियोगी परीक्षाओं का माध्यम बनायेगा, के अंक प्रदर्शित होने चाहिए व केवल एक पास सर्टिफिकेट विद्यार्थी को निर्गत होना चाहिए। अन्य विषयों के केवल सतत् विस्तृत मूल्यांकन के अंक, विद्यालय द्वारा दिये गये अंक पत्र में प्रदर्शित होने चाहिए, यदि ऐसा होता है तो विद्यार्थी को परीक्षा के भय से निजात मिलेगी, साथ ही वह प्रारम्भ से ही, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर अपना ध्यान लगा पायेगा, शिक्षा के व्यवसायी करण के दौर में विद्यालयों की अच्छे परिणाम देने की होड़ में विद्यालय प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु तैयारी को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। हाँ विद्यार्थी की विद्यालय में उपस्थिति अवश्य बोर्ड के अंक

पत्र में दर्शायी जानी चाहिए ताकि विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय आयें, जो अन्यथा विद्यालयों की एक समस्या है। अन्यत्र प्रवेश का आधार भी मेंटिल ऐबिलिटी व एक भाषा के अंक होने चाहिए।

आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के समय में कम्प्यूटर विषय को कक्षा एक से लेकर कक्षा 10 तक गणित की भाँति मुख्य विषय का दर्जा दिये जाने की आवश्यकता है। कम्प्यूटर की शिक्षा इतनी उच्चतर (advance) हो कि वह रोजगार परक हो, कम्प्यूटर सभी बच्चों को प्रिय विषय होता है। कम्प्यूटर की उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने में उन्हें किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आज एक मैकेनिकल/सिविल इंजीनियरिंग का छात्र, जिसने सूचना प्रौद्योगिकी पढ़ी ही नहीं होती है, अपनी शानदार आजीविका सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से कमा लेता है यदि चाहता है। उस आजीविका की बुनियाद क्यों न विद्यालयों में ही डाल दी जाय। विषयों में अंकों के स्थान पर ग्रेड्स भी दिये जा सकते हैं किन्तु दो ग्रेड्स की बीच में केवल 5 प्रतिशत का अन्तर होना चाहिये।

विद्यार्थियों को प्रारम्भ से कि अर्न्तविद्यालयी राज्य स्तरीय या स्कूल स्तरीय शैक्षिक प्रतियोगिताओं जैसे साइन्स ओलिम्पियाड, मैथ्स ओलिम्पियाड जो विद्यालयी मूल्यांकन से अधिक विश्वसनीय है में अवश्य भाग लेना चाहिए, इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थी के प्रदर्शन को अवश्य विद्यालय द्वारा दिये गये अंक पत्र में प्रदर्शित करना चाहिए।

विद्यालयों को 'ओपन बुक परीक्षा' भी विद्यालय में करवानी चाहिए और उसका विवरण अंक पत्र में किया जाना चाहिए। ताकि विद्यार्थी अपने को जाँचे कि क्या वे किताब की सहायता से प्रश्नों का उत्तर लिखने में सक्षम हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिवर्ष कक्षा 01 से कक्षा 12 तक अंक पत्र के अतिरिक्त उसके व्यक्तित्व विकास पर एक रिपोर्ट कार्ड दिया जाना चाहिए, जिसमें प्रतिमाह उसने जिन – 2 पाठ्य सहगामी कार्यकलापों में भाग लिया है, का विवरण विद्यार्थी के प्रदर्शन सहित अंकित होना चाहिए साथ ही उसमें विद्यार्थी द्वारा की गई सामुदायिक सेवा व समाज सुधार में उसके योगदान व उसके देश हित में किए गये कार्यों का पूर्ण ब्यौरा होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी को समाज के व देश के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके। उसमें विद्यार्थी की प्रगति चाहे वह शैक्षिक हो अथवा व्यक्तित्व की हो या मानवीय हो का विस्तृत वर्णन होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व विकास पर समुचित ध्यान दें, व एक समाज का जिम्मेदार नागरिक बन सके, जो उनके भविष्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

कक्षा 11 व 12 में चूँकि विद्यार्थी के पास अपनी रूचि के विषय लेने की छूट होती है, वह किन्ही दो विषयों का चयन कर सकता है जिसके अंक बोर्ड द्वारा निर्गत अंक पत्र में प्रदर्शित किये जाय, उन विषयों

की बोर्ड परीक्षाओं में यह ध्यान रखा जाय कि कोई भी प्रश्न ऐसा न पूछा जाय जो रटने की क्षमता पर आधारित हो, ताकि विद्यार्थी पर परीक्षा का भय व बोझ न हों। सतत् विस्तृत मूल्यांकन तथा मेन्टल ऐबिलिटी की परीक्षा 11 व 12 में भी जारी रहनी चाहिए। सतत् विस्तृत मूल्यांकन का विवरण विद्यालय द्वारा निर्गत अंक पत्र में किया जाना चाहिए। यहाँ भी अंक पत्र जो बोर्ड द्वारा निर्गत हो में विद्यार्थी द्वारा चयनित दो विषयों के व मेन्टल ऐबिलिटी के अंक व विद्यार्थी की विद्यालय में उपस्थिति दर्शायी जानी चाहिए। उपस्थिति में प्रतिशत के स्थान पर वास्तविक उपस्थिति/ कुल कार्य दिवस दिखाये जाने चाहिए ताकि पता चले कि बोर्ड द्वारा निर्धारित कार्य दिवस विद्यालय ने पूरे किए हैं या नहीं। यदि वह बोर्ड द्वारा निर्धारित विषयों में उत्तीर्ण है तो एक उत्तीर्ण सार्टिफिकेट दिया जाना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर ध्यान दे पायेंगे जो वर्तमान शिक्षा व परीक्षा प्रणाली के साथ मुश्किल होता है।

विद्यालय के पास अवश्य ऐसी योजनायें होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी भय व तनाव मुक्त वातावरण में मेहनती बने क्योंकि जीवन में सफल होने के लिए मेहनत व मेन्टल ऐबिलिटी की ही आवश्यकता होती है। हमारे पास आर० सी० जैन कक्षा 8 पास, चेयरमेन जैन ग्रुप ऑफ इन्सिट्युशन्स बैंगलौर, राजिन्दर गुप्ता कक्षा 9 पास सी० ई० ओ० ट्राइडेन्ट ग्रुप लुधियाना आदि कई के ऐसे उदाहरण हैं जो प्रमाणित करते हैं कि बिना शैक्षिक योग्यता के भी सफलता के चरमोत्सकर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

अभिभावकों का अपने बच्चों पर अच्छे अंक लाने का दबाव व उनके भविष्य की चिन्ता स्वाभाविक है कयोंकि उनके पास अपने बच्चे की क्षमता का आकलन करने का कोई और विकल्प नहीं है इसीलिए वह अंक पत्र में प्रदर्शित अंकों को बच्चे की मानसिक क्षमता का मापदंड मानते हैं जो कि अधिकतर उनकी रटने की क्षमता होती है। यदि उन्हें समय – 2 पर विद्यार्थी की मेन्टल ऐबिलिटी से अवगत कराया जाय तो वे चिन्ता मुक्त रहेंगे।

यदि हम विद्यार्थियों, अभिभावकों को तनाव मुक्त देखना चाहते हैं, तो हमें अपनी परीक्षा प्रणाली में पूर्ण परिवर्तन करना होगा और ऐसी प्रणाली विकसित करनी होगी जो विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता का आकलन करे न कि रटने की क्षमता का, जिसमें विद्यार्थी व अभिभावक भय मुक्त व तनाव मुक्त रह व जिससे विद्यार्थी वर्तमान के लिए नहीं वरन् भविष्य के लिए तैयार हो।

श्रीमती रजनी कान्ता बिष्ट

प्रधानाचार्या
बी॰ एल॰ एम॰ एकेडमी